हिन्दी विभाग
स्नातक द्वितीय
पत्र संख्या :- 03

प्रयोगवाद

जिस प्रकार द्विवेदी युग की स्थूलता और इतिवृतात्मकता की प्रतिक्रिया छायावादी काल में प्रकट हुई उसी प्रकार प्रगतिवादी भाषा की अतिशय सपाट बयानी और सीधे जीवन समस्याओं के चित्रण की नीरसता के विपरित नये प्रयोगों का दौर चला यद्यपि किये नये प्रयोग छायावाद के साथ ही प्रारंभ हुए थे। पर उनका उस समय प्रमुख उद्देश्य प्रयोग नहीं था। 1943 में अज्ञेय द्वारा प्रकाशित 'तारसप्तक' के साथ नये प्रयोग की तरफ कवि विशेष रूप से अग्रसर हुए। ये प्रयोग किसी विशिष्ट विचारधारा के कवियों तक सीमित न थे अपितु प्रत्येक धारा के कवियों ने इन नये प्रयोगों को अपनाने का प्रयत्न भी किया।

इस प्रकार विरोध की प्रक्रिया के तहत प्रयोगवाद का ...

विलक्षण रूप 'नकेन' के प्रपद्यवाद के रूप में सामने आया।

अन्वेषण प्रयोगवादी कवियों की मूल दृष्टि रही है वर्तमान वैज्ञानिक युग की उलझी हुई अत्यन्त जटिल गुत्थियां तो उसके अन्वेषण की विजय रत है। प्रयोगवादी कविता, कविता की एक नूतन शैली है। जो सत्य को पाठक तक पहुँचाने के लिए विविध प्रयोगों का सहारा लेती है। सही अर्थों में कहा जाए तो प्रयोगवादी कविता वर्तमान वैज्ञानिक खोजों के प्रभाव में साहित्यिक स्तर पर नित नवीन और सूक्ष्म, शिल्पगत तथा शैलीगत प्रयोगों को प्रश्रय देने वाली कविता है।

डॉ० डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त के शब्दों में 'नई कविता, नये समाज के नये मानव की नई प्रवृत्तियों की नई

अभिव्यक्ति नई शब्दावली में है जो नये पाठकों के नये दिमाग पर नये ढंग से नया प्रभाव उत्पन्न करती है।"

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
मो० - 8292227041
ईमेल benamkumar13@gmail.com

दिनांक
19/10/2020